उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश पर्यटन

यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा

प्रयागराज

तीर्थराज प्रयागराज

गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी पूज्यनीय नदियों के संगम स्थल के किनारे बसा पवित्र शहर प्रयागराज, तीर्थों में तीर्थराज कहलाता है। प्राचीन हिंदू ग्रंथों में इसका असंख्य बार उल्लेख किया गया है। सृष्टि की रचना के पश्चात भगवान ब्रह्मा द्वारा यहाँ सबसे पहला यज्ञ सम्पन्न किया गया था, इसी प्रथम यज्ञ के 'प्र' और 'याग' अर्थात यज्ञ की सन्धि द्वारा प्रयाग नाम बना। यह नगर आज भी प्राचीन किंवदंतियों में जीवंत है। कहा जाता है कि प्रलय आने पर भी यह नगर अचल रहेगा।

गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का मिलन स्थल यहाँ त्रिवेणी संगम कहलाता है। मान्यता है कि इन पवित्र नदियों के अनूठे संगम में स्नान करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, पुण्य मिलता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है । यहाँ प्रत्येक वर्ष माघ मेला लगता है। हर छह वर्षों में अर्धकुम्भ और हर बारह वर्षों के उपरांत महा कुम्भ का आयोजन होता है जिसमें विश्व के विभिन्न कोनों से करोड़ों श्रद्धालु संगम में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं।

पर्व

- महा कुंभ मेला (हर बारहवें वर्ष)
- अर्धकुम्भ (हर छठे वर्ष)
- माघ मेला (हर वर्ष जनवरी से फ़रवरी)

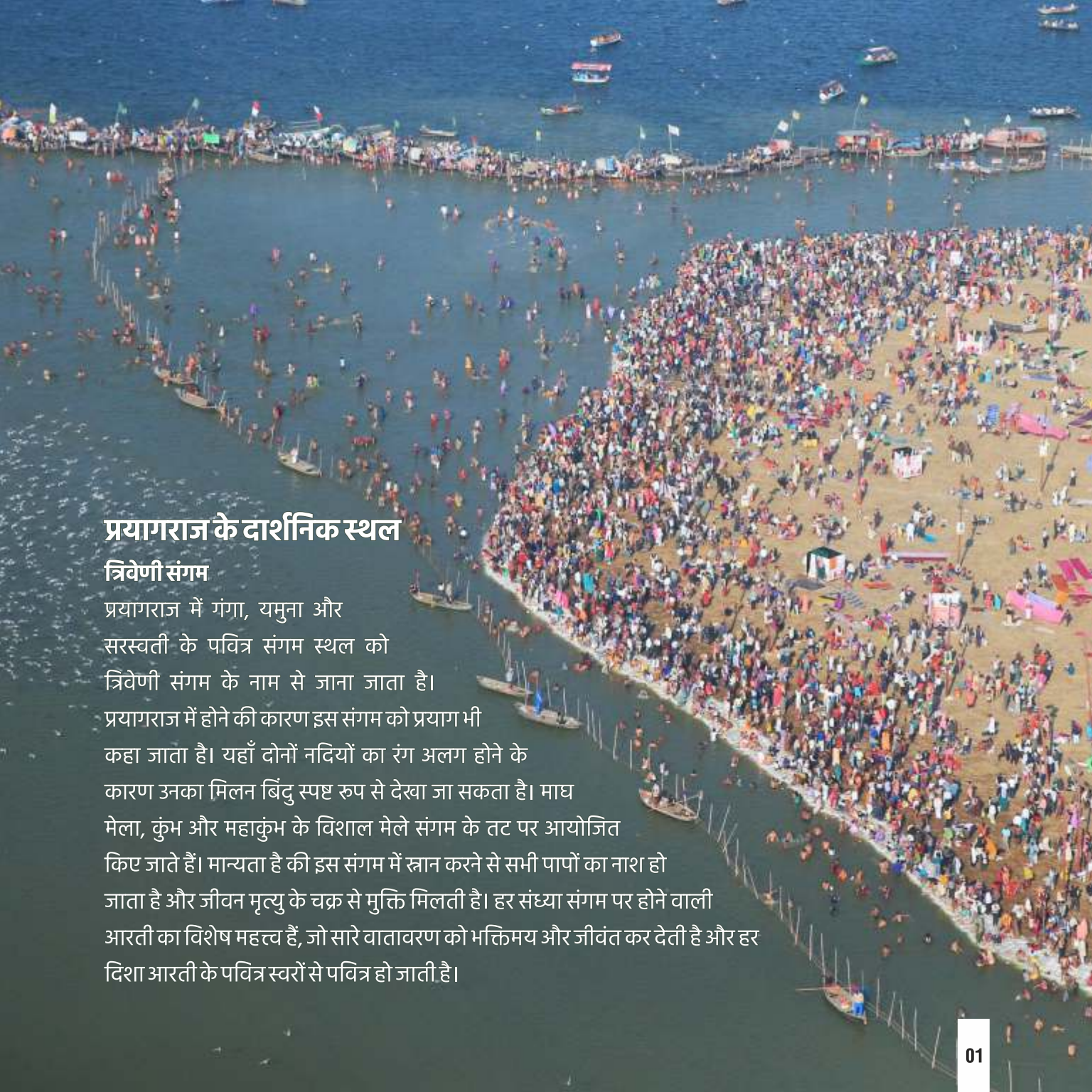

प्रयागराज के दार्शनिक स्थल

त्रिवेणी संगम

प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम स्थल को त्रिवेणी संगम के नाम से जाना जाता है। प्रयागराज में होने की कारण इस संगम को प्रयाग भी कहा जाता है। यहाँ दोनों नदियों का रंग अलग होने के कारण उनका मिलन बिंदु स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। माघ मेला, कुंभ और महाकुंभ के विशाल मेले संगम के तट पर आयोजित किए जाते हैं। मान्यता है की इस संगम में स्नान करने से सभी पापों का नाश हो जाता है और जीवन मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है। हर संध्या संगम पर होने वाली आरती का विशेष महत्त्व हैं, जो सारे वातावरण को भक्तिमय और जीवंत कर देती है और हर दिशा आरती के पवित्र स्वरों से पवित्र हो जाती है।

अक्षयवट

अक्षयवट त्रिवेणी संगम के समीप मॉ यमुनाा के बायें तट पर प्रयागराज किले के अन्दर वर्तमान में अवस्थित हैं। अक्षय का शाब्दिक अर्थ होता है जिसका कभी 'क्षय' न हो और 'वट' का शाब्दिक अर्थ होता है बरगद का पेड़। इस प्रकार अक्षयवट का पूर्ण अर्थ होता है, कभी नष्ट न होने वाला बरगद का पेड़। पुराण के अनुसार इसका नाश प्रलयकाल में भी न हुआ था। पुराणानुसार इस पूज्य वृक्ष का पूजन करने से अक्षय फल मिलता है।

पातालपुरी मन्दिर

यह मंदिर संगम के तट पर स्थित किले के ऑगन के पूर्व फाटक की तरफ नीचे तहखाने में स्थित है। इसका मुख्य द्वार पश्चिम की ओर है जिसमें कुछ सीढ़ियों से नीचे उतरना पड़ता है। मंदिर में बहुत से देवी देवताओं और शिवलिंग की स्थापना की गयी है जिसमें श्री गणेश, बाबा गोरखनाथ, नरसिंह अवतार धर्मराज आदि की मूर्तियॉ स्थापित हैं। मन्दिर में कुल 43 मूर्तियॉ हैं। यह मन्दिर अपनी सजावट एवं विलक्षण चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध चीनी यात्री हवेनसांग सन् 644 ई0 के आस-पास इस मन्दिर का भ्रमण किया था।

लेटे/बड़े हनुमान जी मंदिर

हनुमान मंदिर एक मात्र ऐसा मंदिर है, जहां भगवान हनुमान एक झुकी हुई मुद्रा 'वीरभद्र' में देखे जाते हैं, जहां चौड़ा माथा, बड़ी भुजाएं, चौड़ी कमर सहज रूप से भक्तों के मन में वीरता की भावना जगाती है।

श्री बड़े हनुमान जी की मूर्ति के दाहिने पैर के नीचे अहिरावण की मूर्ति स्थित है, जिसे दुर्भावनाओं और बुरे कर्मों का नाश करने वाला माना जा रहा है, श्री बड़े हनुमान जी की मूर्ति के बाएं पैर के नीचे कामदा देवी की मूर्ति स्पष्ट है। कामदा देवी को इच्छा शक्ति की देवी माना जाता है और वे अहिरावण की आराध्या देवी हैं। श्री बड़े हनुमान जी की मूर्ति के पास और माथे की ओर श्री राम चंद्र जी और लक्ष्माण जी की मूर्तियाँ स्थित हैं इस हनुमान मंदिर के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि हर साल गंगा का जल स्तर बढ़ने पर मंदिर जलमग्न हो जाता है। बड़े हनुमान जी के बारे में पौराणिक कथा कहती है कि पवित्र गंगा नदी का जल भगवान हनुमान की मूर्ति के पैर छूने के लिए प्रतिवर्ष आती है। प्रयागराज में हनुमान मंदिर एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण के रूप में है क्योंकि इस मंदिर में सभी धर्म और सभी वर्गों के लोग साल के किसी भी समय जा सकते हैं।

शंकर विमान मण्डपम

शंकर विमान मण्डपम एक चार मंजिला मंदिर हैं जिसकी बनावट दक्षिण भारतीय शैली पर आधारित है। इस 130 फीट ऊंचे मंदिर में कुमारिल भट्ट, जगतगुरु शंकराचार्य, कामाक्षी देवी (51 शक्तिपीठ समेत) और योगसहस्त्र सहस्त्रयोग लिंग (108 शिवलिंग हैं आसपास) स्थित हैं।

नागवासुकी मन्दिर

यह मन्दिर नागराज वासुकि को समर्पित संगम के उत्तर दिशा में दारागंज क्षेत्र में स्थित है, इनकी गणना प्रयाग के प्रमुख देवों में की जाती है। पुराणों के अनुसार देव एवं असुरों द्वारा किए गए सागर मंथन में मथनी बने मंदराचल पर्वत के चारों ओर रस्सी के रुप में नागराज वासुकि ने अपने को प्रयुक्त होने हेतु समर्पित किया था। स्कन्द पुराण में इस स्थान को पृथ्वी पर नागह्रद तीर्थ कहा गया है। प्रतिवर्ष नाग पंचमी के दिन यहाँ पर विशाल मेले का आयोजन होता है। ऐसी मान्यता है कि गंगा स्नान के बाद इस मंदिर में नागवासुकि जी के दर्शन करने से पापों का नाश होता है तथा काल सर्प दोष सदैव के लिए समाप्त हो जाता है।

भीष्म पितामह मंदिर

प्रयागराज में स्थित भीष्म पितामह मंदिर महाभारत के मुख्य पात्र भीष्म पितामह को समर्पित है और भारत में उनका ये उनका इकलौता मंदिर है।
भीष्म पितामह का असली नाम देवव्रत था और वे गंगा के सातवें पुत्र थे। इस मंदिर में उनकी 12 फीट लंबी मूर्ति स्थापित है, जिसको तीरों की शय्या पर लेटा हुआ दर्शाया गया है। भीष्म अष्टमी के मौके पर इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है जिनको यहाँ पूजा-अर्चना करने से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

आदि श्री ऊँकार गणपति

यह प्रसिद्ध तीर्थ प्रयाग के दारागंज क्षेत्र में स्थित दशाश्वमेध घाट पर भारत के 21 सिद्ध गणपति तीर्थ में से एक है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार प्रयाग में आदि कल्प के आरम्भ में स्वयं ओंकार ने चारों वेदों के साथ मूर्तिमान होकर यहां गणेश जी की स्थापना व आराधना की थी। श्री गणेश जी का प्रमुख दिन चतुर्थी व बुद्धवार है तथा मुख्य पर्व-माघ शुक्ल चतुर्थ, भाद्र शुक्ल चतुर्थी व गणेशोत्सव हैं। इन पर्वों पर हजारों की संख्या में तीर्थयात्री एवं श्रद्धालु गण दर्शन पूजन करते हैं।

द्वादश माधव

पौराणिक मान्यता के अनुसार श्री हरि विष्णु ने प्रयागराज में संगम की रक्षा के लिए द्वादश रूप धारण किए थे। प्रयागराज में अलग अलग स्थानों पर भगवान विष्णु के ये 12 मंदिर स्थित हैं जिनको अलग अलग नामों से जाना जाता है। इनमें त्रिवेणी माधव (त्रिवेणी संगम), असि माधव (नगवासुकी मंदिर), संकष्टहर माधव(प्रतिष्ठानपुरी, झूंसी), शंख माधव(छतनाग, मुंशी बगीचा), श्री आदिवेणी माधव (जल में), श्री गदा माधव(छींवकी गाँव), श्री पद्म माधव (बीकर देवरिया), श्री मनोहर माधव(जानसेनगंज), श्री बिंदु माधव(द्रौपदी घाट), श्री वेणी माधव(दारागंज) और श्री अनंत माधव(चौफटका) सम्मिलित हैं।

वेणी माधव मंदिर

वेणी माधव मंदिर श्री वेणी माधव के रूप में श्री विष्णु और त्रिवेणी मां के रूप में मां लक्ष्मी को समर्पित है। पद्म पुराण में भी लिखा है कि जो लोग त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान करते हैं और उसके बाद वेणी माधव मंदिर में पूजा में भाग लेते हैं, वे जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं। रामचरितमानस (बालकाण्ड) में भी लिखा है कि सभी ऋषि-मुनि त्रिवेणी में पवित्र स्नान करने, अक्षयवट के नीचे निवास करने और श्री वेणी माधव की पूजा करने के लिए प्रयागराज आते हैं। प्रसिद्ध वैष्णव संत चैतन्य महाप्रभु ने भी इस पवित्र स्थान पर लंबे समय तक तपस्या की थी। ऐसा माना जाता है कि श्री विष्णु ने गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम त्रिवेणी को राक्षस गजकर्ण से मुक्त कराया था और अपने भक्तों को श्री वेणी माधव के रूप में प्रयागराज में रहने का वादा किया था। वह प्रयाग के नगर देवता हैं।

संकटमोचन हनुमान मंदिर

प्रयागराज के दारागंज क्षेत्र में गंगा के तट पर हनुमान जी को समर्पित प्रसिद्ध संकटमोचन हनुमान मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि संत समर्थ गुरु रामदास जी ने स्वयं यहां भगवान हनुमान की मूर्ति स्थापित की थी। मंदिर के परिसर में शिव-पार्वती, गणेश, भैरव, दुर्गा, काली और नवग्रह की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

श्री अलोप शंकरी मन्दिर

श्री अलोपशंकरी देवी जी की शक्तिपीठ संगम और अक्षयवट के उत्तर पश्चिम दिशा में लगभग 03 कि0मी0 दूरी पर अलोपीबाग क्षेत्र में स्थित है। इस स्थान पर सती की उगलियाँ गिरी थीं और अलोप हो गई थीं। सती की उगलियाँ गिरने और अलोप हो जाने के कारण इस स्थान को अलोपशंकरी देवी का स्थान कहा जाता है। यहाँ एक छोटे जलकुण्ड वाली चतुर्भुज पीठिका के ऊपर छोटे काठ के झूले की देवी रुप में पूजा की जाती है। इस स्थान पर किए गए दर्शन एवं व्रत के फल का लोप नहीं होता है। इसलिए भी इस स्थान को अलोपशंकरी मन्दिर कहा जाता है।

महर्षि भारद्वाज आश्रम

यह आश्रम वर्तमान में इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा बालसन चौराहे के मध्य स्थित है। वैदिक काल के सर्वाधिक प्राचीन एवं पूज्यतम् ऋषियों में से एक महर्षि भारद्वाज जी द्वारा स्थापित यह आश्रम एक समृद्ध एवं विस्तृत विश्वविद्यालय सदृश था तथा महर्षि भारद्वाज जी इसके कुलपति थे। इस आश्रम में विद्यार्थी ज्ञान एवं दर्शन की शिक्षा के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान किया करते थे। महर्षि भारद्वाज मुनि के ग्रन्थ **'यंत्र सर्वस्व'** में विमानिक ज्ञान का **'अंगवोधिनी'** नामक ग्रन्थ में जल, वायु, चुम्बक, वाष्प, विद्युत एवं अंशु का उल्लेख तथा इसमें सूर्य की किरणों से विमान चलाने का वर्णन एवं **'यन्त्रार्णव'** ग्रन्थ में विमान बनाने की कला का वर्णन किया गया है। ऐसा माना जाता है कि पुष्पक विमान का निर्माण यहीं पर हुआ था। श्री रामचन्द्र जी द्वारा लंका के राजा रावण का वध करने के पश्चात् पुष्पक विमान से लौटते समय ऋषि भारद्वाज जी से आशीर्वाद लेने के लिए यहाँ आए थे।

भारद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा।
तिन्हहि राम पद अति अनुरागा।।

कल्याणी देवी मंदिर

कल्याणी देवी मंदिर देश के 51 शक्ति में से एक है। यह मंदिर प्रयागराज के कल्याणी देवी मोहल्ले में स्थित है। मान्यता है की जब भगवान शिव पूरी दुनिया में अपनी पत्नी माता सती का जलता हुआ शरीर लेकर विलाप कर रहे थे तब भगवान विष्णु ने उनको रोकने के लिए अपने चक्र से माता सती के शरीर के कई हिस्से कर दिये। धरती पर जहां भी माता का अंग गिरा वहीं एक शक्तिपीठ स्थापित हो गया। नव रात्रि के पर्व के दौरान यहाँ श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है।

हनुमत निकेतन

श्री हनुमत निकेतन मंदिर प्रयागराज के प्रमुख मंदिरों में से एक भगवान हनुमान को समर्पित है। यह मंदिर प्रयागराज के सिविल लाइन्स क्षेत्र में स्थित है। मंदिर के एक हिस्से में भगवान हनुमान, राम, लक्ष्मण, सीता और देवी दुर्गा की मूर्तियाँ हैं। दूसरे हिस्से में सूर्य, गणेश, उमा महेश्वर, लक्ष्मीनारायण और गरुड़ की मूर्तियाँ हैं और बीच में द्वादश ज्योतिर्लिंग और सरस्वती और राधा कृष्ण की मूर्तियाँ हैं।

नवग्रह मंदिर

नवग्रह मंदिर प्रयागराज के रामबाग क्षेत्र में स्थित है। यह मंदिर शास्त्रों में वर्णित 9 ग्रहों को समर्पित है। सफ़ेद संगमरमर से निर्मित इस मंदिर में सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु व केतु के साथ भगवान शंकर, हनुमान, क्षीर सागर में लेटे विष्णु भगवान और माँ लक्ष्मी की प्रतिमाएँ भी स्थापित हैं।

ललिता देवी मंदिर

यमुना नदी के तट के समीप, प्रयागराज के मीरापुर मोहल्ले में ललिता देवी मंदिर स्थित है। यह प्रयागराज के तीन शक्ति में से एक है। देवी सती के इस प्राचीन मंदिर को महा शक्तिपीठ के नाम से भी जाना जाता है। ललितादेवी मंदिर का निर्माण श्रीयंत्र पर आधारित है। मान्यता है की यहाँ माता सती की हस्तांगुलिका गिरी थीं। ललितादेवी के मंदिर में भगवती दुर्गा महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में विराजमान हैं। इसके अलावा यहाँ संकटमोचन हनुमान, श्रीराम, लक्ष्मण व माता सीता तथा नवग्रह की मूर्तियां और श्री राधा-कृष्ण की मूर्तियां भी स्थापित हैं।

शिवकुटी मंदिर – नारायण आश्रम

प्रयागराज के शिवकुटी मोहल्ले में गंगा के तट पर स्थितशिवकुटी मंदिर का अत्यधिक धार्मिक महत्व है। कहा जाता है कि भगवान राम यहां आये थे और यहाँ स्थापित शिव लिंग की पूजा अर्चना की थी। इसके पास ही नारायण आश्रम भी स्थित है, जिसे श्री नारायण महाप्रभु द्वारा स्थापित करा गया था।

रूप गौड़ीय मठ

रूप गौड़ीय मठ प्रयागराज के तुलाराम बाग इलाके में स्थित है।इस मंदिर की स्थापना 1929 में भक्ति सिद्धांत सरस्वती प्रभुपादजी ने की थी। इस्कॉन के संस्थापक श्री ए.सी. भक्तिवेदांत महाराज ने यहीं दीक्षा प्राप्त की थी। यहां श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु, श्री राधा-कृष्ण, भगवान शिव-माता पार्वती और देवी अन्नपूर्णा की सुंदर मूर्तियां स्थापित हैं।

श्री तक्षकेश्वर नाथ मन्दिर

संगम नगरी, दरियाबाद अवस्थित यह सुप्रसिद्ध मन्दिर विश्व का इकलौता तक्षक तीर्थ स्थल है। इस स्थल को "बड़ा शिवाला" के नाम से ख्याति प्राप्त है। वैदिक परम्परा के अनुसार श्री तक्षक तीर्थ सृष्टि के आदिकाल से ही पौराणिक गणनानुसार 20 लाख वर्ष से अधिक प्राचीन है। इनका उल्लेख पद्म पुराण के 82 पाताल खण्ड के प्रयाग महात्मय में 82वें अध्याय में मिलता है। मन्दिर में स्थापित पाँचों लिंग आदि कालीन है।

श्री दुर्वासा ऋषि आश्रम

महर्षि दुर्वासाा का मंदिर प्रयाग में संगम स्थल से पॉच कोस पंचकोसीय मार्ग पर पूर्व में ककरा कोटवा में स्थित है। महर्षि अत्रि एवं परमसती अनुसुइया के घनघोर तप के फलस्वरूप स्वयं भगवान शिव ही दुर्वासा जी के रूप मे दत्तात्रेय एवं चन्द्रमा के साथ अवतीर्ण हुए। मन्दिर में महर्षि दुर्वासा जी, शिवलिंग, पर्वती एवं गणेश जी की प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस स्थान पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु, तीर्थयात्री एवं पर्यटक श्री दुर्वासा ऋषि आश्रम/मंदिर के दर्शनार्थ इस स्थल पर आते हैं।

श्री मनकामेश्वर मंदिर

यह प्राचीन भगवान शिव का मंदिर सुरम्य रूप से यमुना के तट पर सरस्वती घाट के पास स्थित है। किंवदंती है कि माता सीता ने संगम में स्नान किया और भगवान शिव की पूजा अर्चना करने की इच्छा व्यक्त की। चूंकि यहां शिव का कोई मंदिर नहीं था, इसलिए भगवान श्री राम ने उनके लिए एक मंदिर स्थापित किया। क्योंकि यहाँ माता सीता की इच्छा पूरी हुई, इसलिए मंदिर को मनकामेश्वर (अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति) कहा जाने लगा।

श्रृंगवेरपुर धाम

श्रृंगवेरपुर धाम मॉ गंगा के तट पर प्रयागराज जनपद मुख्यालय से लगभग 40 कि0मी0 की दूरी पर स्थित परम पावन भूमि है। जैसा कि विशविदित है कि श्रृंगवेरपुर धाम वह भूमि है जहॉ पर मॉ गंगा के तट पर माता शांता एवं श्रृंग ऋशि जी की तपोभूमि एवं आश्रम था, जो वर्तमान में भी पूरी भव्यता के साथ स्थापित है। महाराजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में आमंत्रण पर श्रृंगीऋषि जी ने यज्ञ कराया था, जिससे महाराज दशरथ को भगवान श्रीराम सहित 04 पुत्रों की प्राप्ति हुई। श्रृंगवेरपुर धाम जहॉ से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने भगवती सीता, अनुज लक्ष्मण जी के साथ वन गमन के समय रात्रि वास करते हुए द्वितीय दिवस में नौका द्वारा गंगा पार किया था। यही नहीं बल्कि निषादराज का आतिथ्य स्वीकार करते हुए उन्हें गले से लगाकर छुआछूत का भेदभाव मिटाते हुए इसी भूमि से राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का संदेश प्रसारित किया था। यहाँ मुखवती गंगा हैं यहीं पर भगवती सीता और गंगा जी का संवाद भी हुआ था और माता गंगा ने सीता जी को सकुशल वन से वापसी के लिए आशीर्वाद दिया था।

श्रृंगवेरपुर धाम के अन्तर्गत अन्य आकर्षक दर्शनीय स्थल-

- श्री शान्ता श्रृंगी ऋषि मन्दिर
- श्री रामशयन आश्रम
- श्री हनुमानगढ़ी आश्रम रामचौरा
- राजघाट
- श्री निषादराज किला (पुरातात्विक स्थल)
- श्री रामघाट
- पर्यटक सुविधा केन्द्र
- निषादराज पार्क

पड़िला महादेव मंदिर

प्रयागराज से तक़रीबन 16 किमी। दूर फाफामऊ में स्थित पड़िला महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित हैं। इसे पांडेश्वर महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है की इस मंदिर की स्थापना स्वयं पाण्डवों ने अपने वनवास काल के दौरान, भगवान श्री कृष्ण के कहने पर की थी। प्रतिवर्ष यहाँ शिवरात्रि का पर्व धूम धाम से मनाया जाता है और मेला भी लगता है।

शहीद चंद्रशेखर आज़ाद पार्क

133 एकड़ क्षेत्रफल में फैला चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क, प्रयागराज स्थित मनमोहक उद्यान है। 1870 में ब्रिटेन के प्रिंस अल्फ्रेड की शहर यात्रा को चिह्नित करने के लिए बनाया गया। के साथ, यह प्रयागराज का सबसे बड़ा पार्क है। इसका नाम क्रांतिकारी चंद्र शेखर आज़ाद के नाम पर रखा गया था, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के दौरान यहां अपने जीवन का बलिदान दिया था।

अल्फ्रेड पार्क में विक्टोरिया मेमोरियल

विक्टोरिया स्मारक इटैलियन चूना पत्थर से बनी वास्तुकला की एक विशिष्ट अंग्रेजी बारोक शैली है। यह जेम्स डिग्रेस ला टौचे द्वारा वर्ष 1906 में कमीशन किया गया था, जो ब्रिटिश भारत में एक आयरिश सिविल सेवक थे और उन्होंने अपना अधिकांश समय उत्तर-पश्चिमी प्रान्तों में बिताया था। यहाँ पर महारानी विक्टोरिया की एक विशाल प्रतिमा को स्थापित किया गया था, जिसे स्वतंत्रता के बाद हटा दिया गया था।

इलाहाबाद संग्रहालय

सुरम्य चन्द्रशेखर आजाद पार्क (कंपनी बाग) में स्थित यह संग्रहालय भारत के कुछ राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालयों में से एक है। संग्रहालय भवन की आधारशिला 14 दिसम्बर 1947 को पंडित जवाहरलाल नेहरु द्वारा रखी गई थी, जिसमें अब 16 दीर्घाओं में आयोजित चित्रों, मूर्तियों, सिक्कों, चीनी मिटटी की चीजें, वस्त्र और प्राकृतिक इतिहास के नमूने का खजाना है। यहां मुख्य आकर्षण में चन्द्रशेखर आजाद की कोल्ट पिस्तौल और गांधी स्मृति वाहन, 47-मॉडल वी-8 फोर्ड ट्रक पर 12 फरवरी 1948 को त्रिवेणी संगम (संगम) में महात्मा गांधी की राख को विसर्जित किया गया था।

इलाहाबाद संग्रहालय का टेराकोटा संग्रह पूरी दुनिया में अपनी तरह के सबसे बड़े संग्रह में गिना जाता है, जहां सबसे पुराना टेराकोटा, सिंधु घाटी सभ्यता के युग का है।

इलाहाबाद संग्रहालय के खुलने का समय सुबह 10 बजे से सायं 5.30 तक है, एवं प्रत्येक सोमवार को बन्द रहता है।

भारतीय पर्यटकों हेतु रू0 50.00 एवं विदेशी पर्यटकों हेतु रू0 500.00 प्रवेश शुल्क निर्धारित है। अन्य जानकारी हेतु विभाग के लैण्ड लाइन नं- 0532-2407409 पर सम्पर्क करें।

स्वराज भवन और आनंद भवन

स्वराज भवन/हाउस ऑफ फ्रीडम (पूर्व में आनंद भवन) को तत्कालीन चर्च रोड पर स्वराज भवन कहा जाता है, पंडित मोती लाल नेहरु ने इसे खरीदा था। 1970 में, इंदिरा गांधी ने भारत सरकार को यह घर दान कर दिया। आंनद भवन अब एक स्मारक संग्रहालय के रूप में कार्य करता है, जिसमें नेहरू परिवार की विरासत को प्रदर्शित करने वाली यादगार वस्तुओं का एक आकर्षक संग्रह है, जिसमें किताबें, चित्र, तस्वीरें और पिछले युगों के व्यक्तिगत वस्तुए शामिल हैं।

स्वराज भवन के खुलने का समय सुबह 10 बजे से सायं 5.30 बजे तक एवं प्रत्येक सोमवार को यह बंद रहता है। सम्पर्क सूत्र- 0532-2467674 । आनंद भवन माह अप्रैल से सितम्बर तक सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक एवं माह अक्टूबर से मार्च तक सुबह 9.30 से सायं 5.30 बजे तक खुलता है। आनंद भवन प्रत्येक सोमवार एवं राष्ट्रीय अवकाश में बन्द रहता है। आनंद भवन में ग्राउण्ड फ्लोर एवं प्रदर्शनी हेतु रु0 20 का शुल्क एवं ग्राउण्ड फ्लोर, फर्स्ट फ्लोर एवं प्रदर्शनी हेतु रु0 70 का प्रवेश शुल्क निर्धारित है। सम्पर्क सूत्र- 0532-2467096

तारामंडल

1979 में निर्मित और प्रयागराज के एलनगंज क्षेत्र में आनंद भवन के बगल में स्थित, जवाहर तारामंडल गांधी-नेहरू परिवार का घर था। यह 80 से भी अधिक लोगों की क्षमता रखने वाला तारामंडल अंतरिक्ष और खगोलीय शो आयोजित करता है। यहाँ भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु के जन्मदिवस के अवसर पर 14 नवंबर को वार्षिक जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल व्याख्यान भी आयोजित किया जाता है। तारामंडल के शो का समय सुबह 11 बजे, 12 बजे से सायं 4 बजे तक विजिटर के लिए आयोजित किया जाता है। तारामंडल में प्रवेश हेतु रु0 60.00 का शुल्क निर्धारित है।

राजकीय पब्लिक लाइब्रेरी/ थॉर्नहिल मायने मेमोरियल

1864 में स्थापित, मायने मेमोरियल भारत के सबसे पुराने पुस्तकालयों में से एक है, जिसमें कुछ दुर्लभ पांडुलिपियों सहित लगभग 125,000 पुस्तकों का संग्रह है। यह इमारत प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार रिचर्ड रोस्केल बेने द्वारा डिजाइन की गई एक तरह की 'स्कॉटिश बैरोनियल' वास्तुकला के लिए सबसे अच्छी तरह से जानी जाती है। प्रयागराज के संयुक्त प्रांत की राजधानी होने पर यह विधान सभा के रूप में भी काम करती थी। पुस्तकालय में फिरदौसी द्वारा लिखित फारसी में शाहनामा की पांडुलिपियां, मुगल सम्राट शाहजहां के पुत्र द्वारा शिकोह द्वारा अनुवादित उपनिषद और संस्कृत में लिखी गई रघुवंश टीका आदि संग्रहित है।

ऑल सेंट्स कैथेड्रल

ऑल सेंट्स कैथेड्रल जिसे पत्थर गिरजा (चर्च ऑफ स्टोन्स) के नाम से भी जाना जाता है, भारत के प्रयागराज में स्थित एक एंग्लिकन कैथेड्रल है। जिसे यूरोप के 13वीं शताब्दी के गोथिक शैली के चर्चों के बाद तैयार किया गया, यह भारत में अपने शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा निर्मित सबसे उत्तम गोथिक पुनरुद्धार भवनों में से एक है। ब्रिटिश वास्तुकार सर विलियम इमर्सन, जिन्होंने विक्टोरिया मेमोरियल, कोलकाता को भी डिजाइन किया था, ने 1871 में कैथेड्रल को डिजाइन किया था।

ख़ुसरो बाग

17वीं शताब्दी में निर्मित यह उद्यान मुगल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहारण है। यह खुसरो मिर्जा का अंतिम विश्राम स्थल के रुप में जाना जाता है। यहां पर चारदीवारी वाला बगीचा एवं दो अन्य बलुआ पत्थर के मकबरे शाह बेगम (जहांगीर की पत्नी) और निथार बेगम, (खुसरों की बहन) का मकबरा स्थापित है।

इलाहाबाद फोर्ट

प्रयागराज में संगम के निकट स्थित इस किले को मुगल सम्राट अकबर ने 1583 में बनवाया था। वर्तमान में इस किले का कुछ ही भाग पर्यटकों के लिए खुला रहता है। इस किले में 03 बड़ी गैलरी हैं जहॉ पर ऊॅची मिनार हैं। किले का कुल क्षेत्रफल 30000 वर्ग फुट है। अकबर ने इस किले का निर्माण मुगलकाल में पूर्वी भारत से अफगान विद्रोह को खत्म करने के लिए किया था। किले के अन्दर अशोक स्तम्भ, सरस्वती कूप, जोधाबाई महल, अक्षयवट तथा पातालपुरी मंदिर स्थित है।

गुरुद्वारा पक्की संगत

अहियापुर-मालवीय नगर इलाके में स्थित, इस प्रतिष्ठित गुरुद्वारे का निर्माण गुरु तेग बहादुर जी की यात्रा की स्मृति में किया गया था। वे 1666 में यहां आए थे और कई महीनों तक रहे थे।

मदन मोहन मालवीय पार्क

मदन मोहन मालवीय पार्क शहर के दक्षिणी भाग में यमुना नदी के किनारे स्थित पार्क है। यह शहर के बीच में स्थित है। 1858 में लॉर्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र इसी स्थान पर पढ़ा था जिसके परिणाम स्वरूप ईस्ट इंडिया कम्पनी से ब्रिटेन सरकार को भारत पर नियंत्रण का पूर्ण हस्तांतरण प्राप्त हुआ था।

म्योर सेंट्रल कॉलेज (इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

1866 में प्रयागराज में म्योर सेंट्रल कालेज की स्थापना हुई जो आगे चलकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। म्योर कालेज का नाम तत्कालीन संयुक्त प्रांत के गवर्नर विलियम म्योर के नाम पर पड़ा। 9 दिसम्बर 1873 को म्योर कॉलेज की आधार शिला टामस जार्ज बैटिंग नार्थब्रुक द्वारा रखी गयी।

सीनेट हॉल

इस हॉल का निर्माण सर स्विंटन जैकब ने 1910-1915 में किया था। सीनेट हॉल को छतरीनुमा ढॉचे से सजाया गया है एवं ऊपरी मंजिल में गहरे लाल रंग की बाल्कनिया व झरोखे और दिवारों पर मेहराबनुमा डिजाइन है।

उच्च न्यायालय

प्रयागराज स्थित उच्च न्यायालय को 1869 में आगरा से प्रयागराज स्थानांतरित कर दिया गया था। 1916 में निर्मित इस भव्य इमारत में स्थित मुख्य न्यायाधीश का न्यायालय कक्ष भारत के सभी उच्च न्यायालयों में सबसे बड़ा है। यह प्रयागराज का एक अत्यंत ऐतिहासिक स्थल है

उल्टा किला (झूंसी)

उल्टा किला प्राचीन शहर प्रतिष्ठान पुर (अब झूंसी) में स्थित एक पुरातात्विक स्थल है, जो चंद्रवंशी राजाओं (चंद्र वंश) की राजधानी के रुप में जाना जाता है। उल्टा किला साइट ने अपने नवपाषाण स्तरों के लिए 7100 ईसा पूर्व की कार्बन 14 डेटिंग प्राप्त की है।

ऐसा माना जाता है कि प्रतिष्ठानपुर मूल रूप से राजा इला द्वारा स्थापित किया गया था और इस ऐतिहासिक तथ्य से संबंधित एक मात्र सबूत है वहाँ दिखाई देने वाले ऊंचे टीले हैं। यहां से खुदाई में मिले लेख छठी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं और ताम्रपाषाण से लेकर प्रारंभिक मध्ययुगीन काल तक के पांच सांस्कृतिक चरणों से संबंधित पुरावशेष मिलने के प्रमाण प्राप्त हुए है।

वाटर स्पोर्टस एवं फ्लोटिंग रेस्टोरेंट

संगम नगरी प्रयागराज में वाटर स्पोर्टस एवं फ्लोटिंग रेस्टोरेंट का शुभारम्भ होटल राही त्रिवेणी दर्शन, यमुना बैंक रोड से किया गया है। फ्लोटिंग रस्टोरेंट में आने वाले सभी पर्यटकों को उच्च कोटि के शाकाहारी व्यंजन दिये जाते हैं तथा यहीं से ही वाटर स्पोर्टस का संचालन किया जाता है। यहां आने वाले पर्यटक संगम दर्शन व सुजावन देव मंदिर तक की बोट राइड करते हैं। इसका संचालन उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लि0 द्वारा किया जा रहा है।

यहां के बोट राइड पैकेजस की जानकारी होटल राही त्रिवेणी दर्शन के स्वागत पटल / दूरभाष-0532-2558649, 8009325533, 9532437599 पर के द्वारा किया जा सकता है।

प्रयागराज के आस-पास के प्रमुख आकर्षण

- भीटा गांव - 18 कि.मी.
- गढ़वा किला - 46 कि.मी.
- सीतामढ़ी - 57 कि.मी.
- विंध्याचल शक्तिपीठ - 90 कि.मी.
- वाराणसी - 125 कि.मी.
- चुनार - 128 कि.मी.
- चित्रकूट - 137 कि.मी.
- अयोध्या - 167 कि.मी.

संगम क्षेत्र के निकट अलोपीबाग/मधवापुर में स्थित स्थल

- कालभैरव मन्दिर
- चित्रगुप्त मन्दिर
- भारत सेवाश्रम संघ

संगम क्षेत्र के समीप दारागंज में स्थित स्थल

- टोडरमल का किला
- संकट मोचन हनुमान मन्दिर

बैरहना/रामबाग/कटघर स्थित स्थल

- निम्बार्क आश्रम
- काली बाड़ी
- रामकृष्ण मिशन

कर्नलगंज क्षेत्र व समीपवर्ती स्थल

- स्वामी नारायण मन्दिर (जॉर्ज टाउन)

सिविल लाइन्स/अशोक नगर क्षेत्र स्थित स्थल

- स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स (मेयो हॉल)
- श्री शिरडी साईं बाबा मन्दिर
- लॉ म्यूजियम

खुसरोबाग/कल्याणी देवी/बलुआ घाट स्थित स्थल

- इस्कॉन मन्दिर
- दारा शाह अजमल

फाफामऊ/तेलियरगंज

- अखिलेश्वर महादेव मन्दिर
- कोटेश्वर महादेव मन्दिर
- छुहारा हनुमान जी मन्दिर
- गंगा गैलरी, मम्फोर्डगंज

झूंसी क्षेत्र स्थित स्थल

- गंगोली का शिवाला
- तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली, अंदावा
- ऐन्द्रि देवी

अरैल क्षेत्र स्थित स्थल

- सोमेश्वर नाथ मन्दिर
- नागेश्वर महादेव मन्दिर
- शूलटंकेश्वर मन्दिर
- नृसिंह मन्दिर
- महर्षि महेश योगी आश्रम
- वल्लभाचार्य जी की बैठक
- सच्चा बाबा आश्रम
- फलाहारी बाबा आश्रम
- त्रिवेणी पुष्प

श्री अखिलेश्वर महादेव

श्री स्वामीनारायण मंदिर

त्रिवेणी पुष्प प्रयागराज

लॉ म्यूजियम

शांता श्रृंगी ऋषि मन्दिर

श्रृंगवेरपुर धाम

पर्यटक सुविधा केंद्र

श्रृंगवेरपुर गंगा घाट

इस्कॉन मंदिर

मेयो हॉल

भारत सेवा आश्रम संघ

लॉ म्यूजियम और अभिलेखागार

क्या खाएं -

1- इलाहाबादी लाल अमरुद
2- लोकनाथ गली घंटाघर चौक, प्रयागराज में स्थित प्रसिद्ध व्यंजन एवं उनकी दुकान
   - निराला की चाट
   - बाबा फूट क्रीम
   - मातादीन की लस्सी
   - हरी की नमकीन, समोसे एवं गरम मसाले
3- देहाती रसगुल्ला मधवापुर एवं सी0एम0पी0 कॉलेज रेलवे ब्रिज के पास
4- मक्खन मलाई, हीवेट रोड अजन्ता टॉकीज के पास
5- पान, सोफिया लॉरेन्स, सिविल लाइन्स, प्रयागराज।

प्रसिद्ध कला-

- मूंज क्राफ्ट

आवासीय इकाईयों एवं होटल का विवरण

होटल राही इलावर्त, सिविल लाइंस, प्रयागराज	ilawart@upstdc.co.in.	9415311133, 0532-2102784, 8004929778
होटल त्रिवेणी दर्शन, सिविल लाइंस, प्रयागराज	trivenidarshan@upstdc.co.in	9415311133, 0532.2558646
कान्हा श्याम, सिविल लाइंस,	info@hotelkanhashyam.com	0532-2560123
ग्राण्ड कान्टिनेन्टल, सिविल लाइंस	info@birhotel.com	0532.2260631, 2260633
यात्रिक, सरदार पटेल मार्ग सिविल लाइंस	yatrik_hotel@rediffmail.com	532-2260921,22,23, 9935690925
मिलन पैलेस, स्ट्रेची रोड	Info@hotelmilanpalace.com	0532.2421506
रविशा कान्टिनेन्टल., निकट हाईकोर्ट	hotelravishacontinental@gmail.com	7388200886
इलाहाबाद रिजेन्सी, सिविल लाइंस	Info@hotelallahabadregency.in	05322407835, 9415316321
सम्राट, सिविल लाइंस	hotelsamrat@gmail.com	0532 2561200
प्रयाग, स्टेशन रोड	prayaghotel1959@gmail.com	0532 2656416
प्रयाग इन, अशोक नगर	prayaginn2010@gmail.com	0532 26224451
हर्ष आनन्द, सिविल लाइंस	mail@HotelHarshAnanda.com	91.532.2427697,91
साकेत, सिविल लाइंस	Iqbal@hotelsaket.in, Iqbal9335@gmail.com	7905020091
विलास, सिविल लाइंस	hotelvilas@gmail.com	0532.3209984,2260878
अमन पैलेस, पुलिस लाइन्स	hotelamanpalaceallahabad@gmail.com	9389568981
ग्लैक्सी सिविल लाइंस	contact@GalaxyHotel.com	91.9918901108
ब्लेसिंग, सिविल लाइंस	quest@blessingstheultimate.com	0532 2406875
वेलेनटाइन, सिविल लाइंस	gmvalentines@gmail.com	9415215912
यू0आर0, सिविल लाइस	gmurhotel@gmail.com	9839686876
न्यू टेप्सो, सिविल लाइंस	hoteltepso@gmail.com	9415216572
जे0के0 पैलेस, सिविल लाइंस	azamik@rediffmail.com	9307090405, 0532-22615
इम्पीरियल हाउस, अशोक नगर	Imperialhouse2010@hotmail.com	9415289340, 0532-2622753
प्लेटिनम इन, निकट हाईकोर्ट	hotelplatinnuminn@gmail.com	83770 04514
दी लीजेन्ट, निकट हीरा हलवाई	info@hotelthelegend.com	0532 2272200
स्टार रिजेन्सी, सिविल लाइंस	hotlstarregency@gmail.com	0532-2420714
अजय इन्टरनेशनल, बहादुर शास्त्री मार्ग	hotelajayinternational@rediffmail.com, ajayinternationalhotel@gmail.com	0532-2422026, 2422925, 2623843, 9336762824, 9336762825
सनसिटी जानसेनगंज	hotelsuncity@gmail.com	9452960328
पोलो मैक्स, जॅ0 रेलवे स्टेशन	ald.polomax@hotelpolotowers.com	7706001509, 91 532-256100
आचर्ड वन, 25/3 बी. लाल बहादुर शास्त्री मार्ग	contact@orchardone.in	9999700093, 0532-2402583
होटल रामा कॉन्टिनेन्टल		9415205768

प्रयागराज परिक्षेत्र के पर्यटक स्थल

कौशाम्बी

पुरातात्विक स्थल, कौशाम्बी-प्रयागराज जनपद मुख्यालय से लगभग 60 किमी0 एवं कौशाम्बी जनपद मुख्यालय मंझनपुर से 30 किमी0 की दूरी पर पुरातात्विक स्थल कौशाम्बी स्थित है। इस स्थल पर प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में बौद्ध देशों से बौद्ध अनुयायी दर्शन-पूजन भ्रमणार्थ आते हैं।

कौशाम्बी के भग्नावशेषों में प्रमुख स्थल निम्नवत हैं:-

- **घोषिताराम बौद्ध विहार**- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध छठे एवं नवें वर्ष में कौशाम्बी आए एवं इस विहार में ठहरने के पश्चात कई महत्वपूर्ण धर्मोपदेश दिए।
- **अशोक स्तम्भ**- कौशाम्बी पुरातात्विक क्षेत्र का प्रमुख आकर्षण अशोक स्तम्भ है, जो कि सम्राट अशोक द्वारा स्थापित किया गया था, जिस पर दुर्लभ राजाज्ञाएं अंकित हैं।
- **सम्राट उदयन के किले के भग्नावशेष**- सम्राट उदयन ने इस स्थल पर एक किले का निर्माण करवाया था। इस स्थल पर उत्खनन में अनेक बहुमूल्य वस्तुए प्राप्त हुई

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- **मॉ शीतला का मन्दिर**- देश की 51 शक्तिपीठों में से एक शीतला धाम का पौराणिक इतिहास में एक अलग ही महत्व है। सती का कर (पंजा) कड़ा में गिरा था। उन्हीं के नाम से कड़ा का नामकरण हुआ।
- **संदीपन आश्रम**- जनश्रुति के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के गुरू संदीपन का आश्रम कोखराज के पास गंगा नदी के किनारे है। गंगा के इस घाट को संदीपन घाट के नाम से जाना जाता है।
- **गोस्वामी तुलसीदास की ससुराल**- महेवा घाट- रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की ससुराल यमुना किनारे महेवा घाट में है।यहीं उनको पत्नी रत्नावली ने जो शिक्षा दी उससे तुलसीदास को 'रामचरितमानस' जैसे महान ग्रन्थ को लिखने की प्रेरणा मिली।
- **मंसुरिया माता मन्दिर**- जनपद कौशाम्बी के ग्राम किशुनपुर अम्बारी, तहसील चायल में स्थित मंसुरिया माता मन्दिर है। प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार को हजारों श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन-पूजन किया जाता है।
- **मॉ कामाक्षी मन्दिर**- यह मन्दिर जिला मुख्यालय मंझनपुर से शहर के पश्चिम में लगभग 10 किमी0 की दूरी पर स्थित

है। यहाँ पर वर्ष शारदीय एवं चैत्र नवरात्र पर भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें जनपद के कोने-कोने से श्रद्धालु एवं पर्यटक माता कामाक्षी के दर्शन-पूजन हेतु आते हैं।

- **संत मलूकदास**- मध्ययुग के प्रख्यात संत मलूकदास ने कड़ा में जन्म लिया था। उनकी जन्म, कर्म व समाधि स्थली कड़ा में ही है।
- **राम जानकी मन्दिर बजहा**- जी0टी0 रोड पर इमामगंज से दो किमी0 की दूरी पर राम जानकी का भव्य व आधुनिक मन्दिर है।
- **पभोषा(प्रभासगिरी) जैन मंदिर**- जनपद कौशाम्बी के तहसील मंझनपुर से लगभग 30 किमी0 की दूरी पर यमुना नदी के किनारे तथा प्रयागराज से लगभग 55 किमी0 की दूरी पर यह प्राचीन स्थल स्थित हैं। जैन धर्म के छठवें तीर्थांकर भगवान पद्म प्रभु का जन्म कौशाम्बी नगरी में हुआ था और निकट प्रभाष गिरि पर्वत पर दीक्षा ली एवं कालान्तर में इसी स्थान पर कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह भूमि जैन धर्मावलम्बियों के लिए पूजनीय है।
- **श्रीलंका बुद्ध विहार**- यह स्थान कौशाम्बी जनपद से 30 किमी0 दूरी पर स्थित है। इसके संस्थापक डॉ0 टी सीरी विशुद्धि महाथेरो (श्रीलंका के निवासी) हैं। इस बुद्ध विहार में श्रीलंका से लाये गए बोधि वृक्ष स्थापित बगीचा सहित 25 सुविधायुक्त कमरे तथा डारमेंट्री सहित धर्मशाला भी स्थित है।
- **कम्बोडियन बौद्ध विहार**- कम्बोडियन सरकार द्वारा शान्ति एवं अहिंसा के दूत भगवान बुद्ध की तपोस्थली कौशाम्बी में स्थित कम्बोडियन बौद्ध विहार में कम्बोडिया समेत पूरे विश्व से बौद्ध धर्म के अनुयायी प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में यहॉ आते हैं।

कम्बोडियन बौद्ध विहार

प्रमुख होटल/पेइंग गेस्ट

- जैन श्वेताम्बर सोसायटी धर्मशाला, कौशाम्बी।
- श्री पद्म प्रभु दिगम्बर जैन धर्मशाला, कौशाम्बी।
- श्रीलंका बुद्ध विहार धर्मशाला, कौशाम्बी।
- कम्बोडियन बौद्ध विहार, कौशाम्बी।

आवागमन

- **रेल सेवा**- भरवारी रेलवे स्टेशन, कौशाम्बी
  सिराथू रेलवे स्टेशन, कौशाम्बी
- **वायु सेवा**- बमरौली हवाई अड्डा।
- **बस सेवा**- पुरातात्विक स्थल कौशाम्बी बस से जाने हेतु रोडवेज बस सरायअकिल तक तत्पश्चात प्राइवेट वाहन अथवा ऑटो रिक्शा से पहुंचा जा सकता है।
- **सड़क मार्ग**- प्रयागराज-कौशाम्बी- लगभग 50 किमी0

प्रसिद्ध व्यंजन- कौशाम्बी प्रमुख रुप से केले के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

प्रसिद्ध त्योहार, मेले एवं महोत्सव- रामनवमी का मेला, शरद एवं चैत्र नवरात्र का मेला।

घोषिताराम बौद्ध विहार

अशोक स्तम्भ

पभोषा(प्रभासगिरी) जैन मंदिर

श्रीलंका बुद्ध विहार

कम्बोडियन बौद्ध विहार

माँ शीतला का मन्दिर

प्रतापगढ़

तीर्थराज प्रयाग के निकट पतित पावनी गंगा नदी के किनारे बसा प्रतापगढ़ जिला ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- **बेल्हा देवी धाम**- प्रतापगढ़ स्थित सई नदी के किनारे पर ऐतिहासिक बेल्हा देवी का मंदिर है। यहाँ सती का बेला (कमर) का भाग गिरा था। इसी कारण इस जगह को बेल्हा देवी धाम के नाम से पूजा जाने लगा।
- **घुइसरनाथ धाम**- जनपद प्रतापगढ़ की तहसील लालगंज में सई नदी के तट पर स्थित यह धाम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं पौराणिक विशिष्टता के कारण करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र हैं। यहां भगवान घुइसरनाथ का बहुत विशाल मन्दिर है।
- **हौदेश्वर नाथ धाम**-यह धाम प्रतापगढ़ जिले के तहसील मुख्यालय से 12 किमी0 दक्षिण दिशा में माँ गंगा के पावन तट पर स्थित है। मलमास एवं सावन के मास में हजारों श्रद्धालु यहाँ पर दुग्धाभिषेक एवं जलाभिषेक करने आते हैं।
- **बेलखरनाथ धाम**-यह धाम प्रतापगढ़ मुख्यालय से करीब 15 किमी0 दूर सई नदी के किनारे स्थित बाबा बेलखरनाथ धाम बेलखरिया राजपूतों के इतिहास को समेटे हुए है। मान्यता है कि राजा बेल के नाम से प्रसिद्ध इस शिवलिंग के समक्ष सच्चे मन से मांगी गई मनोकामना निश्चित रूप से पूरी होती है।
- **भयहरणनाथ धाम**- भयहरणनाथ धाम जनपद प्रतापगढ़ मुख्यालय से दक्षिण लगभग 30 किमी0 की दूरी पर स्थित है।यहाँ पर महाशिव रात्रि पर प्रतिवर्ष 4 दिवसीय महाकाल महोत्सव, श्रावण मास एवं मलमास पर एक महीने का विशाल उत्सव का आयोजन, दो दिवसीय घुंघुरी लोकोत्सव तथा प्रत्येक मंगलवार को साप्ताहिक मेले का आयोजन किया जाता है।
- **भक्ति धाम मनगढ़**- प्रतापगढ़ जिले के कुण्डा तहसील मुख्यालय से 2 किमी0 तथा प्रयागराज से लगभग 60 किमी0 की दूरी पर भगवान राधा कृष्ण को समर्पित भक्ति धाम मंदिर स्थित है। इस मंदिर की नींव जगतगुरु कृपालु जी महराज ने रखी थी।
- **शनिदेव धाम**- प्रतापगढ़ जिले के विश्वनाथगंज बाजार से लगभग 2 किमी0 दूर कुशफरा के जंगल में भगवान शनि का प्राचीन पौराणिक मन्दिर लोगों के लिए श्रद्धा और आस्था के केन्द्र है। मान्यता है कि यहॉ आते ही भगवान शनि जी की कृपा का पात्र बन जाता है।

- **दाहिन देवी धाम**-यह धाम जनपद प्रतापगढ़ से 40 किमी0 की दूरी पर प्रतापगढ़ अठेहा मार्ग पर किठावर बाजार से लगभग 4 किमी0 की दूरी पर स्थित है।
- **खुयलन धाम**-यह धाम जेठवारा से 2 किमी0 एवं मान्धाता से 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है। इस स्थान का पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। यह मॉ खुयलन की जन्म स्थली है, इनके दर्शन हेतु दर्शनार्थीगण दूर-दूर से आते हैं।

आवागमन-

- **रेल सेवा**- प्रतापगढ़ जंक्शन रेलवे स्टेशन
- **वायु सेवा**- बमरौली हवाई अड्डा।
- **बस सेवा**-यू0पी0एस0आर0टी0सी0 सिविल लाइन्स, प्रतापगढ़
- **सड़क मार्ग**- प्रयागराज-प्रतापगढ़, लगभग 68 किमी0

प्रसिद्ध व्यंजन- ऑवला का मुरब्बा एवं अचार, ददौली का रसगुल्ला, श्री राम की रसमलाई, गया की नमकीन

प्रसिद्ध कला- यहाँ पर ऑवले से विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे मुरब्बा, अचार बनाए जाने के लिए प्रमुख रूप से प्रसिद्ध है।

प्रसिद्ध त्योहार, मेले एवं महोत्सव- एकता महोत्सव, अजगरा महोत्सव, घुइसरनाथ महोत्सव, बेल्हा देवी मेला, मनगढ़

में श्रीकृष्ण जन्मास्टमी महोत्सव इत्यादि का आयोजन होता है।

भयहरणनाथ धाम

भक्ति धाम मनगढ़

हौदेश्वर नाथ धाम

फतेहपुर

- **भृगु ऋषि आश्रम ओम घाट भिटौरा**- जनपद फतेहपुर मुख्यालय से उत्तर दिशा में 12 किमी0 दूर उत्तर वाहिनी भागीरथी के भिटौरा तट पर महर्षि भृगु मुनि ने तपस्या की थी। भृगु ब्रह्मा के पुत्र थे और भगवती गंगा ब्रह्मा की दत्तक पुत्री थीं।यहाँ पर गंगा नदी का प्रवाह उत्तर दिशा की ओर है। धर्म-शास्त्रों के अनुसार उत्तर वाहिनी गंगा में स्नान का अलग महत्व है।
- **बावनी इमली**- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का साक्षी रहा यह स्थल बिन्दकी तहसील मुख्यालय से 03 किमी0 पश्चिम में मुगल रोड पर खजुआ कस्बे के निकट स्थित है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बावन वीर नायकों को ब्रिटिश सेना ने 28 अप्रैल, 1858 को इमली के पेड़ पर एक साथ फांसी दी थी। बावन शहीदों की स्मृति का स्मारक के रूप में स्थित यह वृक्ष तथा यह स्थान बावनी इमली कहा जाने लगा।
- **असनी**- भारतीय संस्कृति की जीवन रेखा पतित पावनी गंगा के दाहिनें तट पर स्थित असनी, फतेहपुर जनपद मुख्यालय से 10 मील की दूरी पर स्थित है। किंवदन्ती के अनुसार असनी का नामकरण अश्विनी कुमारों के नाम पर पड़ा।
- **खजुहा**- फतेहपुर से 36 किमी0 की दूरी पर स्थित है। खजुहा प्राचीन समय में खजुआगढ़ के नाम से जाना जाता था। औरंगजेब ने शाहशुजा को इस जगह के समीप ही मारा था। अपनी जीत की खुशी में उसने यहाँ एक विशाल और खूबसूरत उद्यान और सराय का निर्माण करवाया। इस उद्यान को बादशाही बाग के नाम से जाना जाता है।
- **असोथर**- कस्बा असोथर जनपद फतेहपुर मुख्यालय से 30 किमी0 और नेशनल हाईवे थरियांव से 12 किमी0 की दूरी पर यमुना नदी के किनारे फतेहपुर जनपद मुख्यालय के दक्षिणी सीमा पर स्थित है। पौराणिक कथा के अनुसार गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने महाभारत काल में ब्रहमास्त्र पाने के लिए यहीं पर आकर तपस्या की थी तभी से इस बस्ती का नाम असफल हो गया, जो कालान्तर में असोथर के नाम से जाने जाना लगा।
- **शिवराजपुर**-यह गांव बिन्दकी के निकट गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। इस गांव में भगवान श्री कृष्ण का एक प्राचीन मन्दिर है। किंवदन्ती के अनुसार मन्दिर में श्री कृष्ण जी की मूर्ति उनकी अनन्य भक्त मीराबाई जी द्वारा स्थापित की गयी थी।

आवागमन-

- **रेल सेवा**- फतेहपुर रेलवे स्टेशन • **वायु सेवा**- बमरौली हवाई अड्डा, प्रयागराज • **बस सेवा**- फतेहपुर बस स्टैण्ड अहमदगंज, फतेहपुर • **सड़क मार्ग**- प्रयागराज-फतेहपुर, लगभग 124 किमी0 (NH30) कानपुर- फतेहपुर लगभग 82 किमी0 (NH30)
- **प्रसिद्ध व्यंजन**- मलवॉ का मोहन पेड़ा, धाता का गुड़ • **प्रसिद्ध त्योहार, मेले एवं महोत्सव**- मकर संक्रांति का मेला, आमावस्या का मेला, महाशिवरात्रि का मेला, श्रावण मास का मेला, कार्तिक पूर्णिमा का मेला, गंगा दशहरा का मेला।

क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालयः 35, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
दूरभाषः (91-532) 2408873 **ई-मेलः** rtoald0532@rediffmail.com

राही इलावर्त पर्यटक आवास गृहः 35, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
दूरभाषः (91-532) 2408377 **ई-मेलः** rahiilawart@up-tourism.com

Scan to UP Tourism Website

Scan to Download E-Book

राही त्रिवेणी दर्शन पर्यटक आवास गृहः यमुना बैंक रोड, कीडगंज, प्रयागराज **दूरभाषः** (91-532) 2558646

पर्यटन निदेशालय, उ.प्र.: सी-13, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ.प्र.), भारत **दूरभाषः** (91-522) 2308916, 2307028
फैक्सः (91-522) 2308937 **ई-मेलः** upstdc@up-tourism.com **वेबसाइटः** www.uptourism.gov.in